वरूथिनी एकादशी — चयनित पूर्ण उपदेश का पुनर्कथन

Varuthini Ekadashi — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — Padma Purana chapter 48, exact controlling revision 336429. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling archived wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 48 — complete electronic comparison, not independent print collation; Wisdomlib / N. A. Deshpande English chapter 48 — complete comparison only; modern prose not copied; Sanskrit Wikisource rightsinfo API — checked CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.48.1–25, Sanskrit Wikisource revision 336429, not a transcription of the original text.

नाम और धार्मिक माहात्म्य

KATHA 6.48.1–9

युधिष्ठिर वासुदेव को नमस्कार करके वैशाख के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम और माहात्म्य पूछते हैं। कृष्ण इसे वरूथिनी बताते हैं। वे इस व्रत को इस लोक और परलोक का सौभाग्य, सुख और पाप से मुक्ति देने वाला कहते हैं। ग्रंथ की धार्मिक भाषा में कठिन परिस्थिति वाली स्त्री के सौभाग्य, सबके भोग और मोक्ष तथा गर्भवास अर्थात् पुनर्जन्म से छुटकारे की प्रशंसा आती है।

कृष्ण उदाहरण में मांधाता और धुंधुमार आदि राजाओं की स्वर्ग-प्राप्ति तथा भव अर्थात् शिव के ब्रह्म-कपाल से मुक्त होने का संक्षिप्त उल्लेख करते हैं। यहाँ मांधाता के साथ किसी वन्य पशु का विस्तृत प्रसंग नहीं है। वे वरूथिनी के फल की तुलना दस हजार वर्षों की तपस्या और कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण पर स्वर्ण-भार देने से करते हैं। श्रद्धा से इसका पालन यहाँ और आगे इच्छित फल, पवित्रता तथा भोग-मुक्ति से जोड़ा गया है।

ये ग्रंथ के माहात्म्य-दावे और छोटे उदाहरण हैं, ऐतिहासिक घटनाओं का प्रमाण या सुख, विवाह, पुनर्जन्म और ग्रह-दोष का निश्चित समाधान नहीं। स्त्री का दुर्भाग्य नैतिक दोष नहीं है और व्रत न रखना किसी की गरिमा या सहायता के अधिकार को कम नहीं करता।

Yudhishthira greets Vasudeva and asks which Ekadashi belongs to Vaishakha's dark fortnight and what its significance is. Krishna names Varuthini. He praises it as bringing good fortune, happiness and release from sin here and beyond. Within the chapter's religious language, its praise includes a woman in adverse circumstances, enjoyment and liberation for all, and release from womb-dwelling, understood as rebirth.

Krishna briefly invokes Mandhata and kings such as Dhundhumara reaching heaven, and Bhava, Shiva, becoming free of Brahma's skull. No extended wild-animal episode involving Mandhata occurs here. He compares its merit to ten thousand years of austerity and a weight of gold given at Kurukshetra during a solar eclipse. Faithful observance is associated with desired benefits here and beyond, purification, enjoyment and liberation.

These are the chapter's devotional claims and brief examples, not verified history or assured remedies for hardship, marriage, rebirth or planetary troubles. Adversity is not a woman's moral fault, and not observing a vow does not reduce anyone's dignity or entitlement to help.

दान और विवाह-संबंधी चर्चा

KATHA 6.48.10–17

कृष्ण दान की तुलना में घोड़े से हाथी, उससे भूमि, फिर तिल, स्वर्ण और अन्नदान को बढ़ते क्रम में रखते हैं। अन्न से पितर, देव और मनुष्य तृप्त होते हैं, इसलिए अन्नदान की विशेष प्रशंसा है। वे कन्यादान और गोदान को उसके समान कहते हैं तथा उल्लिखित दानों में विद्यादान को श्रेष्ठ बताते हैं। वरूथिनी के पालन को उसी धार्मिक फल के साथ जोड़ा जाता है।

इसके बाद कन्या-संबंधी धन से जीविका चलाने और लोभ से विवाह को धन-व्यवहार बनाने की निंदा आती है। पाठ पुण्य-हानि, यातनापूर्ण नरक और अगले जन्म में बिल्ली होने की धार्मिक चेतावनी देता है। अपनी क्षमता के अनुसार अलंकृत कन्या के विवाह का पुण्य इतना बताया गया है कि चित्रगुप्त भी उसकी गणना नहीं कर सकते। यह फल फिर वरूथिनी से जोड़ा जाता है।

विवाह और दान की यह प्राचीन भाषा आज किसी स्त्री की खरीद-बिक्री, स्वामित्व, बाल-विवाह, दबाव या आर्थिक माँग की अनुमति नहीं है। विवाह में सहमति और व्यक्ति की गरिमा सर्वोपरि रहती हैं। पशु देना, आभूषण खरीदना या धन खर्च करना इस पाठ को पढ़ने की शर्त नहीं; शिक्षा और भोजन में स्वैच्छिक सहायता अपनी क्षमता से की जा सकती है।

Krishna ranks gifts in an ascending comparison: horse, elephant, land, sesame, gold and food. Food is especially praised because it nourishes ancestors, gods and people. He places the marriage-associated gift of a daughter and a cow gift alongside food-giving, then calls knowledge-giving foremost among the gifts discussed. Varuthini observance is associated with the same religious merit.

The discussion condemns living on money associated with a daughter and making marriage a transaction through greed. Its religious warnings include loss of merit, torment in hell and rebirth as a cat. The merit of arranging the marriage of an adorned daughter according to one's capacity is described as beyond even Chitragupta's reckoning. That merit is again associated with Varuthini.

This ancient marriage-and-gift vocabulary licenses no buying or selling of women, ownership, child marriage, coercion or financial demand. Consent and personal dignity remain paramount. Animal gifts, jewellery purchases and expenditure are not conditions of this reader; voluntary help with education or food may stay within one's means.

पूरी नियम-चर्चा और समापन

KATHA 6.48.18–25

कृष्ण दशमी के दस त्याज्यों में काँसा, मांस, मसूर, चना, कोद्रव, शाक, मधु, दूसरे का अन्न, दोबारा भोजन और मैथुन का उल्लेख करते हैं। एकादशी की सूची में जुआ, खेल, नींद, तांबूल, दाँत साफ करना, परनिंदा, चुगली, चोरी, हिंसा, रति, क्रोध और झूठ आते हैं। द्वादशी में काँसा, मांस, मदिरा, मधु, तेल, पाठ द्वारा पतित कहे गये लोगों से बातचीत, व्यायाम, यात्रा, दोबारा भोजन, मैथुन, बैल की पीठ पर चढ़ना और मसूर का अन्न छोड़ने की बात है।

आगे वर्णित विधि से वरूथिनी करने को पाप-क्षय और अन्त में अक्षय गति से जोड़ा गया है। रात का जागरण और मधुसूदन की पूजा परम गति की प्रशंसा में आते हैं। कृष्ण पाप के भय और क्षपारि अर्थात् सूर्य के पुत्र से भयभीत व्यक्ति के लिए भी वरूथिनी का उल्लेख करते हैं; तुलना-पाठ इस पुत्र को शनि समझता है। पढ़ने-सुनने का फल हजार गायों के दान के समान तथा विष्णुलोक में सम्मान बताया गया है। अलग समापन-वाक्य अध्याय 48 और उमापति–नारद संवाद में वैशाख कृष्ण वरूथिनी का नाम देता है; बाहर का प्रश्नोत्तर कृष्ण–युधिष्ठिर का है।

यह पूरे अध्याय की वर्णनात्मक पुनर्कथा है, खान-पान या व्रत का अनिवार्य नियम-पत्र नहीं। भोजन, पानी, नींद, दाँतों की सफाई और जरूरी उपचार न रोकें। पाठ की सामाजिक दूरी को आज बहिष्कार न बनाएँ, और ग्रह-भय के कारण कोई खर्च या उपाय आवश्यक न मानें। धार्मिक फल निश्चित परिणाम नहीं हैं; पढ़ने के लिए उपवास, जागरण या दान आवश्यक नहीं।

Krishna's ten Dashami exclusions name bell-metal, meat, lentils, chickpeas, kodrava grain, greens, honey, another person's food, a second meal and sexual relations. The Ekadashi discussion lists gambling, play, sleep, betel, tooth-cleaning, disparagement, malicious gossip, theft, violence, sexual activity, anger and false speech. Dvadashi's exclusions include bell-metal, meat, liquor, honey, oil, conversation with people the source labels fallen, exercise, travel, a second meal, sexual relations, riding a bull and lentil food.

The described observance is associated with destruction of sin and an imperishable destination at life's end. Night vigil and worship of Madhusudana appear in praise of the highest destination. Krishna also mentions fear of sin and fear of the son of Kshapari, the Sun; the comparison understands this son as Saturn. Reading and hearing are praised as equal to giving a thousand cows and receiving honour in Vishnu's world. The separate chapter-48 colophon names Vaishakha's dark Varuthini within the Umapati–Narada dialogue; the immediate framing remains Krishna–Yudhishthira.

This is a descriptive retelling of the whole chapter, not a mandatory diet or vow checklist. Do not withhold food, water, sleep, dental hygiene or necessary treatment. Do not turn the social exclusion into present-day discrimination or planetary fear into required spending or remedies. Religious rewards are not assured outcomes; reading requires no fast, vigil or donation.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Varuthini Ekadashi — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.48.1–25, revision 336429, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement is implied. This notice applies to the retelling

and language layers, not unrelated site content or code. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.